आतंक का गढ़ बना आजमगढ़

पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जनपद आजमगढ़ पिछले दो दशकों से पूरी दुनियाँ की नजरों में जानेअनजाने में आ जा रहा है। ये निगाहें किसी अच्छे - उद्देश्य से नहीं अपितु पूरीदुनियाँ को निगलने के लिए उतावले दिखाई दे रहे इस्लामी आतंकवाद के कारण उस जनपद पर बरबस टिक रही हैं। आजमगढ़ में यह सब अचानक नहीं हुआ है। इस 'बीमारी' की अनदेखी का ही दुष्परिणाम है कि आजमगढ़ आज पूरी तरह से इसकी चपेट में है। कभी आर्यमगढ़ के रूप में विख्यात यह क्षेत्र जिसका बिगड़ा स्वरूप ही वर्तमान का आजमगढ़ है। इस जनपद की पहचान महर्षि दुर्वासा, महर्षि भृगु से होती थी। सबसे पहले इस जनपद के इतिहास को बदसूरत किया औरंगजेब जैसे बदनाम एवं क्रूर शासक ने। उस समय यहाँ के राजा विक्रम सिंह थे। अपनी सेना और राज्य का भय दिखाकर औरंगजेब ने हिन्दू राजा को कैद करके जबरन इस्लाम स्वीकार करने के लिए मजबूर किया और उसका नाम रखा आजमशाह। इसी धर्मान्तरित हिन्दू राजा आजमशाह के नाम पर पड़ा है वर्तमान आजमगढ़ का नाम। लेकिन रानी ने हिन्दू धर्म छोड़ने से इन्कार कर दिया और वहाँ से कुछ दूरी पर जाकर एक गाँव में बस गईं। आज भी इस जनपद में 'रानी की सराय' के नाम से वह कस्बा स्थित है। हिन्दू राजा विक्रम सिंह ने अगर राज्य का मोह छोड़कर मेवाड़ केसरी हिन्दुआ सूर्य महाराणा प्रताप के त्याग और बलिदान से प्रेरणा लेकर औरंगजेब का मुकाबला किया होता तो इतिहास आज भी उन्हें सम्मान के साथ याद करता। इस राष्ट्र और जाति के प्रेरणापुरुष - एवं आदर्श राजा विक्रम सिंह बन गये होते। लेकिन राज्य और अपनी स्वयं की संस्कृति और राष्ट्र से बढ़कर लगी। यही कारण है कि आज -चिन्ता उन्हें इस धर्म कोई व्यक्ति आजमगढ़ के राजा को स्मरण नहीं करता। तीन सौ वर्ष पूर्व जो गलती एक हिन्दू राजा ने स्वयं के भोगविलास के लिये की थी, आज वही गलती इस देश के तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादी ढोंगी राजनेता कर रहे हैं, जिसके कारण

आज आजमगढ़ जैसे तमाम जनपद और कस्बे इस्लामी आतंकवाद के गढ़ बन गये हैं। आजमगढ़ के अन्दर आजादी के बाद सन् के दश 1980क में हाजी मस्तान से प्रारम्भ हुई काली दुनियाँ के 'डॉनों' का यह सफर अबू सलेम, अबुल बशर और न जाने कहाँ कहाँ तक जायेगा। आज देश और-दुनियाँ के अन्दर आतंकवाद की कोई घटना हो और उसके सूत्र प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से आजमगढ़ से न जुड़ते-हों, यह असम्भव है। इन सबके बावजूद इस देश की विभाजनकारी राजनीति, तथाकथित धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक दल इसकी लगातार अनदेखी कर रहे हैं। सन् के 1980 दशक का कुख्यात अन्तर्राष्ट्रीय तस्कर हाजी मस्तान इसी जनपद का था। सन् के मुम्बई बम ब्लास्ट के अभियुक्तों में दाउद और अबू सलेम इसी जनपद 1993 से हैं। देश का प्रथम टाडा बन्दी अबू आजमी इसी जनपद का है और उसके बाद तो लगातार एक काली सूची ही आज इन कारनामों को अन्जाम देने वालों की इस जनपद में बन चुकी है। देश की संसद पर हमला, कोलकाता में अमेरिकन सेन्टर पर हमला, संकटमोचन मन्दिरवाराणसी पर आतंकी हमला-, श्रमजीवी एक्सप्रेस में विस्फोट, श्रीराम जन्मभूमि पर आतंकी हमला, दिल्ली, मुम्बई, हैदराबाद, बैंगलूर, जयपुर, अहमदाबाद और गोरखपुर में हुए बम विस्फोट, इन तमाम घटनाओं के सूत्र जिस जनपद से जुड़े हों आखिर वह आतंकवाद का गढ़ नहीं तो क्या होगा? यह आतंक इस्लाम के नाम पर है। इसलिए यह इस्लामी आतंकवाद है। देश और दुनियाँ की 'मानवी सभ्यता' को निगलने के लिये उतावला यह आतंकवाद अगर अपने मकसद में सफल हुआ तो पूरी मानवता के ऊपर घोर संकट छा जायेगा। इसलिये समय रहते राष्ट्रवादी शक्तियों को इसके प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है। 'हिन्दुत्व' की राष्ट्रवादी ताकतें ही इसका मुकाबला कर सकती हैं। तथाकथित धर्मनिरपेक्षता तो इनके लिये खाद और बीज का कार्य कर रही है। अपने निहित सत्तास्वार्थ के लिये राजनीतिक दलों के द्वारा राष्ट्रहितों से किये - जा रहे खिलवाड़ के प्रति हिन्दू समाज को सचेत रहना होगा, यही आज की आवश्यकता है और इसमें ही हिन्दू समाज एवं राष्ट्र का हित भी जुड़ा है।